संवाद

भारत सरकार द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में बहुत सारे प्रयोग किए जा रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आने के बाद से ही नवाचारों एवं सीखने-सिखाने की सामग्री को विकसित करने की पहल जारी है। हाल ही में 20 फरवरी 2023 को भारत के शिक्षा मंत्री के द्वारा बालवाटिका (3–6 वर्ष) के बच्चों के लिए जादुई पिटारा का अनावरण किया गया। जादुई पिटारा की सामग्री बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए उपयुक्त है। शिक्षक, अभिभावक और बच्चे मिलकर अपना जादुई पिटारा अपनी जरूरत और अपने परिवेश के अनुकूल बना सकते हैं। अनावृत्त जादुई पिटारा में बच्चों के लिए खेल-सामग्री, कार्य-पत्रिकाएँ और खेल पुस्तकें शामिल हैं। शिक्षकों और प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षक-सामग्री भी उपलब्ध है। आने वाले अंकों में आपको जादुई पिटारा एवं बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा 2022 से संबंधित लेख पढ़ने को मिल सकते हैं। प्राथमिक शिक्षक पत्रिका शिक्षा, शिक्षार्थी, शिक्षक, अभिभावक, समुदाय आदि के सहयोग से बच्चे के सीखने-सिखाने के लिए विभिन्न आयामों पर लेख साझा करती है। पत्रिका भाषा-विकास, व्यवहार कुशलता, शिक्षणशास्त्र, आकलन इत्यादि पर लेख के जरिए पाठकों से संवाद करती है।

प्रस्तुत अंक में कुल नौ लेख, दो कविता, दो बालमन तथा विशेष शामिल किए गए हैं। इस अंक में दिव्यांगों की समावेशी शिक्षा की संकल्पना को हिंदी सिनेमा के जरिए समझाने का प्रयास किया गया है। समावेशी शिक्षा की संकल्पना राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी दर्शायी गई है। इस लेख में विभिन्न फिल्मों के माध्यम से उन चुनौतियों को रेखांकित किया गया है जिनका सामना बच्चों को परिवार, विद्यालय एवं समाज के स्तर पर करना पड़ता है। दूसरा लेख बहुसांस्कृतिक शिक्षा-शिक्षण और अधिगम के बारे में बताता है कि बहुसांस्कृतिक शिक्षा-शिक्षण अधिगम का एक ऐसा दृष्टिकोण है जो लोकतांत्रिक मूल्यों और विश्वासों पर आधारित है और सांस्कृतिक रूप से विविध समाजों और विश्व के भीतर सांस्कृतिक विभिन्नता को बढ़ावा देना चाहता है। यह प्रत्येक संस्थान अध्यापकों और विद्यार्थियों के साथ-साथ माता-पिता के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है। बहुसांस्कृतिक कक्षा विभिन्न संस्कृतियों के विद्यार्थियों को उनके अनुभवों, ज्ञान, दृष्टिकोण और अंतर्दृष्टि के विशाल कार्य क्षेत्र को एक अवसर प्रदान करती है जिसमें अध्यापक अपनी अहम भूमिका निभा सकते हैं। प्रस्तुत अंक में 'मनोदर्पण : एक पहल' नामक लेख पाठकों को मनोदर्पण कार्यक्रम की पूरी जानकारी देता है। इस

कार्यक्रम के अंतर्गत शिक्षकों, छात्र-छात्राओं तथा उनके अभिभावकों को टोल-फ्री परामर्श सेवाओं, ऑनलाइन लाइव इंटरैक्टिव सत्र, सम्मेलनों आदि के माध्यम से मानसिक तनाव से मुक्ति का मार्ग दिखाया जा रहा है। प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक बच्चे का अपना एक विशेष कौशल होता है जो उसे दूसरों से भिन्न बनाता है। प्राथमिक शिक्षकों को बच्चों में विभिन्न कौशलों को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए जो उन्हें विद्यालयी शिक्षा में सफल बनने में मदद करे तथा देश का अच्छा नागरिक बनने में भी मदद करे।

बच्चे का पालन-पोषण हर समाज के लिए महत्वपूर्ण विषय है, माता-पिता की बच्चे के लालन-पालन में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। महाराष्ट्र के वर्धा जिले में स्थापित आनंद निकेतन विद्यालय में पालक-सभा कैसे आयोजित की जाती है? इस पर आधारित लेख प्रस्तुत अंक में शामिल किया गया है। पाल्य, पालक तथा शिक्षकों का आपसी मेल-जोल बच्चों के विकास के लिए बहुत जरूरी है। बच्चों की कमियों और खूबियों पर बारीकी से शिक्षक और माता-पिता आपस में बात करके समस्या का समाधान कर सकते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सरोकारों को गुजरात के बाल साहित्यकार गिजूभाई बधेका के शैक्षिक प्रयोगों के आलोक में रखकर देखा गया है। गिजूभाई के शैक्षिक विचार शिशु-शिक्षा पर केंद्रित थे, इसलिए वे प्राथमिक शिक्षकों के लिए अधिक प्रासंगिक हैं। किसी भी देश की शिक्षा प्रणाली शिक्षार्थी केंद्रित होनी चाहिए। अतः शिक्षक, शिक्षार्थी, अभिभावक जब ये सभी साथ मिलकर कार्य करते हैं तब किसी भी स्तर की शिक्षा प्रणाली में सुधार लाया जा सकता है।

प्राथमिक स्तर के बच्चों को शिक्षा देने का रोचक माध्यम लोककथाएँ। ये लोककथाएँ क्षेत्रीय बोली में होने के कारण बच्चों के लिए अधिक संप्रेषणीय होती हैं। इन कथाओं से बच्चों का भाषायी विकास किस प्रकार होगा इस बात की जानकारी मिलती है। भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम होती है ऐसे में बच्चों को भाषा सिखाने के लिए किए जाने वाले सभी प्रयास माननीय होने चाहिए।

पत्रिका में 'विशेष' के अंतर्गत 'पूर्व- प्राथमिक शिक्षा के लिए दिशा-निर्देश (भाग 2)' को शामिल किया गया है। आशा है कि आपको यह अंक पसंद आएगा। यदि पत्रिका के संबंध में आपके कोई सुझाव हों तो हमें अवश्य भेजें। हम अपने आगामी अंक में उन्हें शामिल करने का प्रयास करेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

अकादमिक संपादक